आत्मप्रचार पर टिकी नरेन्द्र मोदी सरकार

मनोज कुमार झा

केन्द्र में नरेन्द्र मोदी सरकार बने अभी चंद माह ही हुए हैं कि इसकी असलियत खुलकर सामने आ गई है। दरअसल, थोथे वादे कर जनता को सब्ज़बाग दिखाकर आई यह सरकार कुछ तमाशों के सिवा एक भी ढंग का काम नहीं कर पाई है।

कांग्रेस के भ्रष्टाचार और कुशासन, देश की राजनीति में क्षेत्रीय और स्थानीय लुटेरों के प्रभुत्व और साथ में किसी भी तरह के सकारात्मक जनविकल्प के अभाव ने एक ऐसी राजीतिक शून्यता का संकट पैदा किया कि वर्षों से सत्ता के लिये घात लगाये बैठे घोर प्रतिगामी और पूंजीवादी साम्राज्यवादी हितों के दलाल संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को देश की सत्ता हथियाने का सुनहरा अवसर मिल गया।

दरअसल, अब इस बात की जरूरत ही नहीं रह गई कि भारतीय जनता पार्टी को एक स्वतंत्र राजनीतिक दल के रूप में दिखाने का पाखंड किया जाए। चूंकि, पहले सरकारें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की हुआ करती थीं, जिनमें अन्य मध्यममार्गी और तथाकथित सेक्युलर दलों की भी अहम भूमिका होती थी, इसलिए भाजपा के नेतृत्व के बावजूद संघ सीधी दखलंदाज़ी नहीं कर सकता था। लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। भाजपा का पूर्ण बहुमत है। एनडीए की कोई वक़त नहीं। और तो और, भाजपा अब व्यक्तिकेंद्रित है। नरेन्द्र मोदी। हर-हर मोदी। भारत से अमेरिका तक। भाजपा के वरिष्ठतम नेताओं को सर्वाधिकार संपन संसदीय बोर्ड से हटा कर 'मार्गदर्शक मंडल' में 'राम-राम भजने' के लिए बैठा दिया गया है, मोदी मंत्रिमंडल के किसी भी मंत्री की कोई स्वतंत्र पहचान नहीं। हर जगह बस एक ही नाम हावी है मोदी। मोदी के अब तक के सभी भाषणों में 'मोदी-मोदी' का एक कृत्रिम उन्मादी स्वर गूंजता रहा है भारत से लेकर अमेरिका तक जो प्रायोजित होता है।

और ये नरेन्द्र मोदी मोहरा हैं राष्ट्रीय सेवक संघ के, जिसकी विचार धारा हिन्दू राष्ट्र की है और जिसकी प्रवृत्ति अधिनायकवादी है और जिसकी आर्थिक-राजनीतिक विचारधारा साम्राज्यवादी हितों की पोषक है, जो घोर दमनकारी एवं जनविरोधी है। जिसकी नीति है साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के सहारे सत्ता हासिल करना और साम्प्रदायिक मुद्दों को उठा कर जनता का ध्यान असली मुद्दों से हटाने की कोशिश करना। नरेन्द्र मोदी की सरकार कुछ ऐसी ही तिकड़मों से बनी है, जिनमें शामिल है चुनाव के पहले, चुनाव के दौरान और बाद में भी किया जाता रहा साम्प्रदायिक प्रचार, जगह-जगह प्रयोजित किए गए दंगे, देश के मुसलमानों के ख़िलाफ़ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके संगठनों के नेताओं के विषबुझे बयान सामने आते रहे और अभी भी यहां-वहां साम्प्रदायिक दंगे हो ही रहे हैं। दरअसल, साम्प्रदायिक दंगे ही इस सरकार की जीवनी शक्ति है।

लेकिन अगर संघ की यह समझ है कि साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की उसकी नीति लम्बे समय के लिये कारगर साबित होगी तो यह उसकी ख़ामख़्याली है, ये अलग बात है कि सभी दलों में ऐसे दलबदलुओं की कोई कमी नहीं जो सत्ता के लालच में भाजपा में चले जाएंगे, पर क्या भाजपा सभी को संतुष्ट कर पाएगी? ऐसा संभव नहीं? महाराष्ट्र में तो हिंदुत्व की ताकतों में फूट ऐसी गहरा गई कि 25 साल पुराना शिवसेना के साथ गठबंधन ध्वस्त हो गया। ये अलग बात है कि जिस बालठाकरे को देश की राजनीति में कोई खास तव्वज़ो नहीं मिली, उनके आगे मोदी शीश नवाते हैं और उद्धव ठाकरे मोदी को चेताते हुए कहते हैं कि गुजरात दंगों के बाद जब भाजपा में सभी उनके ख़िलाफ़ थे तो बाला साहब ने ही मोदी का समर्थन किया था। इस तरह, मोदी का घोर साम्प्रादायिक चेहरा जगजाहिर है।

बावजूद अगर नरेन्द्र मोदी पूर्ण बहुमत वाली सरकार के मुखिया बन चुके हैं तो यह स्पष्ट है कि देश किस गहरे राजनीतिक संकट के मुहाने पर जा खड़ा हुआ है। देश की राजनीति में यह दौड़ बेहद संक्रमणकारी है, लूटतंत्र की शक्तियां प्रबल हो उठी हैं और सरकार एक से बढ़कर एक जनविरोधी फ़ैसले लेती जा रही है, जिससे सामाजिक-आर्थिक विघटन और आमजन की वंचना-निस्सहायता गहराती जाएगी।

बहरहाल नरेन्द्र मोदी की सरकार फ़िलहाल प्रचार के भरोसे चल रही है। चुनावों से शुरू हुआ व्यक्तिवादी प्रचार अभी थमा नहीं है। इसकी वजह शायद ये भी हो कि बीच में कई उपचुनाव हुए अभी हरियाणा एवं महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव होने हैं। पर इसे क्या कहा जाए कि अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान भी नरेन्द्र मोदी ने जबरदस्त आत्मप्रचार किया, बहुत बड़ा तमाशा दिखाया और वहां भी 'हर-हर मोदी' का उन्मादी नारा लगवाया। यह सबकुछ पूरी तरह प्रायेजित था। टेलीविज़न चैनल नरेन्द्र मोदी के भाड़े के टट्टुओं की तरह पेश आए। '2005 में किया अपमान, अब कर रहा सम्मान, अब माना अमेरिका।' इस तरह के जुमले लगातार चैनलों पर बोले जाते रहे। मोदी ने अमेरिका जाकर भी वहां कुछ इस तरह भाषणबाज़ी की मानो चुनाव प्रचार ही करने गए हों। वहां से लौटने के बाद उन्होंने घोषणा कर दी कि अमेरिका में भारत का डंका बज रहा है। पहले अमेरिका भारत को नहीं पूछता था, अब मानो वह भारत के आगे नतमस्तक है और यह सिर्फ़ नरेन्द्र मोदी की वजह से।

यही नहीं, लोग़ों को भरमाने के लिए मोदी ने दस-बीस रुपए के नोटों पर भगत सिंह का फोटो छापने की भी योजना बना रखी है, क्योंकि उसे पता है कि अमर शहीद भगत सिंह आम जनता में कितने लोकप्रिय हैं। इस तरह, यह व्यक्ति हर वो चाल चल रहा है जिससे जनता को भुलावे में डालकर अपनी सत्ता को सुरक्षित बनाए रख सके, पर संघ को ध्यान में रखना चाहिए कि नरेन्द्र मोदी के जितने समर्थक हैं, विरोधी कहीं उससे ज़्यादा हैं। रहा सवाल मोहरे का तो संघ के पास नरेन्द्र मोदी के अलावा दूसरा कोई मोहरा है भी नहीं।

हद तो ये है कि अभी चुनाव प्रचार के दौरान भी नरेन्द्र मोदी टपोरी स्टाइल में इस बात को मंचों से कहते हैं कि पहले अमेरिका पूछता था क्या, अब देखो, वहां बज रहा है भारत का डंका। अमेरिका में नरेन्द्र मोदी ने यह भी कह दिया कि भारत अब शिक्षकों और नर्सों को दुनियाभर में एक्सपोर्ट करेगा। यह सब बहुत ही हास्यास्पद है। कुल मिलाकर नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की गरिमा को ही नष्ट कर दिया है। उनकी एक-एक बात मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद होती जा रही है। उन्हें दूसरों की गरिमा का क्या, अपने पद की गरिमा तक का ख़्याल नहीं है। उनके सामान्य ज्ञान का स्तर बहुत ही निम्न कोटि का है जो उनके भाषणों से रोज़ ही जाहिर होता रहा है। इसे विडम्बना ही कहेंगे कि इस घटिया बौद्धिक स्तर का व्यक्ति प्रधानमंत्री की कुर्सी पर काबिज़ हो गया, पर ले-देकर इस व्यवस्था के गहराते संकट का भी परिचायक है, क्योंकि जिस नरेन्द्र मोदी के बरक्स श्रीमान् राहुल गांधी खड़े थे, उनका बौद्धिक स्तर भी नरेन्द्र मोदी भी निम्न है। जाहिर है कि अब जनसंघर्षों से निकले तपे-तपाए नेताओं का अकाल पड़ गया तो विदूषक और जमूरे ही राजकाज चलाएंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक जमूरा कहा जाए तो जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

लेकिन सवाल है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ महज प्रचार के बल पर कब तक नरेन्द्र मोदी की सरकार चलवाता रहेगा। हर चीज़ की एक हद होती है। नरेन्द्र मादी के भीषण आत्मप्रचार से जनता अब उबती जा रही है। भाड़े का मीडिया नरेन्द्र मोदी का ढोल तभी तक बजाएगा, जब तक उनकी वक़्त रहेगी। मीडिया की दुकानदारी पर असर आया तो वह दूसरा राग भी अलापना शुरू कर देगा। वैसे, इस बात में कोई शक नहीं कि अधिकांश चैनलों को पूरी तरह खरीद लिया गया है और नरेन्द्र मोदी का तमाशा इन्हीं के जरिए पूरे देश में दिखाया जाता है। टी वी चैनलों पर 'नरेन्द्र मोदी शो' एक ऐसा धारावाहिक है जो निरंतर चलता ही रहता है।

जहां तक जनता की मूलभूत समस्याओं के हल की बात है, जिसका वादा नरेन्द्र मोदी ने किया था, उस दिशा में सरकार क्या कर सकती है, जब बड़े-बड़े भ्रष्ट और कालाबाज़ारी ही उसमें शामिल हों। भाजपा का पूर्व अध्यक्ष और अभी केन्द्रीय मंत्री गडकरी महाराष्ट्र में ग़रीब लोग़ों से बेशर्मी के साथ कह रहा है कि पैसे सब से ले लो, पर वोट बी जे पी को ही दो। इससे समझा जा सकता है कि ये क्या हैं। ये पैसे से वोट खरीदने वाले हैं, पैसे से विधायक और सांसद खरीदने वाले हैं, स्वयं नरेन्द्र मोदी की सरकार अरबों रुपये खर्च करके बनी है। ये हैं पूंजी के निर्लज्ज दलाल।

अब नरेन्द्र मोदी कह रहे हैं कि मुझे 60 महीने दो, मैं जनता की सारी समस्याओं को दूर कर दूंगा। 60 महीने यानी पांच साल। पांच साल तो इन्हें मिल ही गए हैं। फ़िर क्यों ये चीख़-पुकार मचा रहे हैं। दरअसल, ये राज्यों की सत्ता पर भी अपना कब्ज़ा चाहते हैं जो पूरी तरह असंभव है। भूलना नहीं होगा, नरेन्द्र मोदी पहले अपनी सरकार के लिये 'हनीमून पीरियड' की मांग कर रहे थे।

जो भी हो, संघ को यह समझ लेना चाहिए कि प्रचारतंत्र पर कब्ज़ा जमा लेना अलग बात है, पर सिर्फ़ प्रचार के सहारे सरकार चला ले जाना संभव नहीं है। जनता का पेट तमाशे दिखा कर नहीं भरा जा सकता और संघ लाख चाहे, मोदी को हिटलर नहीं बना सकता, क्योंकि हिटलरों का ज़माना लद चुका है। हां, भड़ैती जितनी करनी हो, नरेन्द्र मोदी कर सकते हैं। पर वो भी कब तक? 60 महीने यानी पांच साल, तो इतने उन्हें मिलें हुए हैं। जो चाहें करें और कर ही रहे हैं। संघ प्रमुख ने विजयादशमी पर सरकारी चैनल 'दूरदर्शन' से स्वयंसेवकों को संबोधित किया यानी देश की जनता को भी। यह छूट उसे नरेन्द्र मोदी के शासन में मिली है, पर इससे क्या देश की जनता संघ की शरण में चली जाएगी? संघ को भूलना नहीं चाहिए कि उसके साम्प्रदायिक औज़ारों को जनता नकारती चली जा रही है। । यूपी में 'लव जिहाद' के भरोसे चुनाव जीतने की उम्मीद थी, जो पूरी नहीं हो सकी। वैसे साम्प्रदायिक वैमनस्य फ़ैलाने और दंगे भड़काने की याजनाओं से संघ विमुख नहीं हो सकता, क्योंकि यही उसकी पूंजी है, पर इसके सहारे कामयाबी कब तक मिलेगी?

सिर्फ़ आत्मप्रचार से नरेन्द्र मोदी की सत्ता टिकाऊ नहीं हो सकती। पर मोदी का ध्यान सिर्फ़ बड़े-बड़े तमाशे कर आत्म प्रचार करने पर ही है। शिक्षक दिवस पर आत्मप्रचार किया। 2 अक्टूबर, महात्मागांधी के जन्मदिवस पर जोरदार तमाशा 'झाड़ू अभियान' चला कर आत्मप्रचार किया। और अब योजना है 14 नवंबर, जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस पर आत्मप्रचार अभियान चलाने की, जिसकी घोषणा मोदी ने कर रखी है।

यही नहीं, लोग़ों को भरमाने के लिए मोदी ने दस-बीस रुपए के नोटों पर भगत सिंह का फोटो छापने की भी योजना बना रखी है, क्योंकि उसे पता है कि अमर शहीद भगत सिंह आम जनता में कितने लोकप्रिय हैं। इस तरह, यह व्यक्ति हर वो चाल चल रहा है जिससे जनता को भुलावे में डालकर अपनी सत्ता को सुरक्षित बनाए रख सके, पर संघ को ध्यान में रखना चाहिए कि नरेन्द्र मोदी के जितने समर्थक हैं, विरोधी कहीं उससे ज़्यादा हैं। रहा सवाल मोहरे का तो संघ के पास नरेन्द्र मोदी के अलावा दूसरा कोई मोहरा है भी नहीं।

सम्पादक के नाम

पानी की समस्या

भारत जैसे देश में वैसे ही बहुत समस्यायें है जिन्हें आये दिन हम झेलते हैं। उनमें से एक बड़ी समस्या पानी की है। आज हमें आज़ादी के 67 साल हो चूके हैं।

लेकिन आज तक भारत के नेता जो अपने आप को जनता के सेवक बताते हैं पानी भी नहीं पहुंचा पाए। ऐसे ही हम बात करते है वडखल विधानसभा क्षेत्र की, इस क्षेत्र का वर्तमान विधायक महेन्द्र प्रताप सिंह है जो कि खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री भी हैं। बडखल गांव के पास ही सेक्टर 49 में रहते हैं। अपने पड़ोस में ही पानी की समस्या का समाधान नही कर पाये।

मैं इसी बडखल गांव की दलित बस्ती का निवासी हुं, जिसमें लगभग 200 घर है। पिछले पांच सालों से,यानि जबसे बड़खल झील सूखी है, यहां पर पानी की परेशानी बनी हुई है।

गांव के लोग इकट्ठे होकर विधायक के पास जाते हैंऔर अपनी समस्या बताते हैं, तो मंत्री जी कहते हैं तुमने तो मुझे वोट ही नही दिया तो मैं पानी क्यों दूं।

दरअसल बात यह है कि हमारा दलित मुहल्ला है हम पर मुहर लगी है हाथी की। और कहते हैं तुम तो मायावती को वोट देते हो मूझे नहीं, जबकि यह ग़लत है।

हम दलितों को एक खेमे में रखा गया और पिछले पांच सालों के दौरान पानी की वजह से हमारे यहां दो बारदाते हुई। जब हमारी माताएं, बहने, बेटी दूसरे मुहल्ले में पानी लेने जाती हैं तो उन पर दबंग जाती के असमाजिक तत्व उन पर गिद्धों की तरह नज़र डालते हैं जिसके कारण हमारे मुहल्ले की दो महिलाओं को अलग-अलग दो बार छेड़-छाड़ तथा शारीरिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा जबकि हमारे मुहल्ले का पार्षद भी एक दलित है। इस साल आचार संहिता लगने से पहले हमने सोचा अबकी बार तो पानी की समस्या का समाधान हो जाएगा।

इस साल (2014) में हम मंत्री के पास 3-15 बार गए लेकिन हर बार झूठा आश्वासन दिया गया।

मुहल्ले में कुछ लोग कहने लगे कि मंत्री जी कुछ नहीं करबाएगा, चलो कृष्ण पाल गुर्जर के पास हमने तो मोदी को जिताया है, वहां गए तो उनके पी ए (बाटला)से बात हुई लेकिन झूठा आश्वासन ही मिला।

आखिर में बी एस पी की टिकट पर खड़ा क्रैशर जोन का प्रधान धर्मवीर भडाना से उम्मीद लगाई कि शायद वो ही पानी का समाधान कर दे लेकिन उन्होंने भी सिर्फ आश्वासन के सिवाय कुछ नहीं दिया। कुल मिलाकर बी जे पी, कांग्रेस, बी एस पी सभी के पास पानी की गुहारे लगाई वो सब आश्वासन तो देते हैं पर पानी क्यू नहीं देते?

-राजेश
गांव बड़खल

तुर्की-ब-तुर्की

''जो ज्यादा बोलते हैं सच नहीं बोलते''

(प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बड़बोलेपन पर चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की टिप्पणी)

हमारा कहना है:-

- यह तो ठीक है कि नरेन्द्र मोदी का सच से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। पर इसका उनके ज़्यादा बोलने से सम्बन्ध नहीं है। झूठ बोलने में भारतीय राजनीति में सत्ता का खेल-खेल रहे हर राजनेता को पारंगत होना पड़ता है। पिछले लोकसभा चुनाव में मोदी ने सिर्फ़ इतना सिद्ध किया कि अब यह खेल वे आप समेत तमाम औरों के मुकाबले कहीं बेहतर खेल रहे हैं।
- झूठ तो सोनिया जी आप भी उतना ही बोल रही हैं जितना मोदी। यह बात अलग है कि फ़िलहाल आपके झूठ मतदाताओं के गले उतना नहीं उतर रहे जितना मोदी के झूठ उतर रहे हैं।
- आपके प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तो बोलते ही नहीं थे। पर चुप रह कर भी वे सिवाय झूठ के और कुछ नहीं कहते थे। क्या ही अच्छा होता कि आप देश को बतातीं कि मोदी के बोलने में ज़्यादा झूठ भरा है या मनमोहन के चुप रहने में।
- एक सच तो सोनिया जी आप और मोदी इकट्ठा बोल ही सकते हैं। वह है आपके दामाद राबर्ट वाड्रा और डी एल एफ की मिलीभगत से चन्द हफ़्तों में सैंकड़ों करोड़ की कमाई का सच। पर यह सच आप दोनों भला कैसे बोलें? आपका तो खैर वाड्रा दामाद ही ठहरा। मोदी की भी मजबूरी यह है कि डी एल एफ भाजपाइयों के लिये वैसे ही दामाद है जैसे कांग्रेसियों के लिये।
- मोदी के साथ मिलकर आप चाहें तो अशोक खेमका और संजीव चतुर्वेदी का सच भी जनता के सामने रख सकती हैं। कैसे आपके मुख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा ने और मोदी के स्वास्थ्य मन्त्री हर्षवर्धन ने क्रमश: इन ईमानदार अफ़सरों को प्रशासनिक आक्रमण का निशाना बनाया है। पर यह भी संभव नहीं लगता क्योंकि खेमका प्रकरण तो आपके अपने इशारे पर ही हुआ और चतुर्वेदी प्रकरण संघ और भाजपा के वरिष्ठ नता जे पी नड्डा के इशारे पर।
- साफ़ है कि न आप और न मोदी कभी सच बोलने जा रहे हैं- न अलग-अलग, न साथ-साथ।